Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	
CENTRE NUMBER	
CANDIDATE NUMBER	

8477174605

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **October/November 2015**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (LK/FD) 105048/1
© UCLES 2015

CAMBRIDGE
International Examinations

[Turn over

https://xtremepape.rs/

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–5

'बिहार के फिरंगी लाला' पर निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कुछ ऐसी हिंदी है जॉन स्मिथ की। गोवा शहर में राष्ट्रीय फ़िल्म उद्योग द्वारा आयोजित फ़िल्म बाज़ार में पहली बार जॉन को देखा। गहरे लाल रंग का कुर्ता पहने वे लोगों को अपना परिचय दे रहे थे। हाथ जोड़ कर सिर झुकाए सबको नमस्ते कहना और उनका ध्यान आकर्षित कर, उनसे हिंदी में घंटों गप्पे हांकना जॉन स्मिथ की ख़ासियत है। हर एक सवाल के जॉन के पास दो-दो जवाब होते हैं। उनको देखकर यह जिज्ञासा तुरंत मन में पैदा होती है कि कोई विदेशी कैसे ऐसी स्पष्ट हिंदी, भारतीय हाव-भाव से और हिंदुस्तानी मुहावरे को समझते हुए बोल सकता है।

जॉन ख़ुद को बिहारी फ़िरंगी कहते हैं। इसके बारे में वह बताते हैं कि सिर्फ़ 11 साल की उम्र में सिडनी से अकेले भारत आए और आते ही बिहार में बस गये। उन्हें बचपन से ही भारत बहुत आकर्षित करता था और भारत आकर हिंदी सीखने के लिए उन्हें बिहार में रहना उचित जान पड़ा। 12 साल वे बिहार में साधु संतों के साथ रहे, हिंदी सीखी, योग सीखा। इस तरह वे बिहारी फ़िरंगी बन गये।

23 साल की उम्र में जॉन वापस अपने देश ऑस्ट्रेलिया चले गए। सिडनी में जॉन की दोस्ती पुरोहित केतकर से हुई जो मराठी टीवी जगत के नामी अभिनेता हैं। पुरोहित ने जॉन को भारत बुलाया और एक मराठी फ़िल्म में काम का आग्रह किया। उसमें उन्हें ब्रितानी अधिकारी की भूमिका के लिए चुना गया। जॉन इस फ़िल्मी दुनिया में निर्माताओं, निर्देशकों और लेखकों से लगातार बात करके अपने संपर्क सूत्र बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं।

जॉन ने एक रोचक किस्सा सुनाते हुए बताया। "मैं कुंभ के मेले में गया। वहां मुझे लोग बड़ी अहमियत देने लगे। वहां पर तैनात सरकारी अधिकारियों ने मुझे सलाम किया। किसी ने सुरक्षा जांच वाली जगह पर मेरी जांच भी नहीं की। मैं समझ नहीं पाया कि यह हो क्या रहा है? जब मैं आगे बढ़ा तो मुझे सुनाई पड़ा- ये राहुल गांधी है। इन्हें जाने दो।" फ़िलहाल जॉन दिल्ली में एक ग़ैर सरकारी संस्था से जुड़े हैं। जो गांवों में बैंकिंग सुविधा के लाभ ग्रामीण लोगों तक पहुँचाती है। लेकिन उनका सपना तो बॉलीवुड में आने का ही है। जिसके बारे में वह ख़ासे आशान्वित है। जॉन कहते हैं, "मुझ जैसे बिहारी फ़िरंगी को बॉलीवुड में मौक़ा तो मिलेगा ही।"

© UCLES 2015

https://xtremepape.rs/

1 जॉन स्मिथ लोगों को अपना परिचय किस तरह देते हैं?

.... [1]

2 जॉन स्मिथ ने बिहार में रहकर किन दो गतिविधियों में अपना समय बिताया?
(कोई दो गतिविधियाँ)

(i) .... [1]

(ii) .... [1]

3 जॉन स्मिथ को किस पात्र की भूमिका निभाने के लिए कहा गया?

.... [1]

4 जॉन स्मिथ को देखकर किस नेता का भ्रम होता है?

.... [1]

5 जॉन स्मिथ अपने किस सपने को साकार करना चाहते हैं?

.... [1]

[अंक:6]

https://xtremepape.rs/

अभ्यास 2 प्रश्न 6

नये पर्यावरण क्लब में शामिल हों।

पर्यावरण कार्यशाला
शास्त्री भवन, रफ़ी मार्ग, नई दिल्ली।

दूरभाष 00-91-1127748952, 00-91-1127572835

शासन द्वारा स्कूली बच्चों की वातावरण संबंधी जानकारी बढ़ाने के लिए स्थानीय स्तर पर पर्यावरण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में छात्रों को अपनी पसंद के प्रसिद्ध पर्यावरणविदों से मिलने का अवसर भी प्रदान किया जाएगा। कार्यशाला में शामिल होने के लिए आवेदन करें।

मोहल्ला स्तर पर पर्यावरण के प्रति प्रोत्साहन बढ़ाने के उद्देश्य से दिल्ली सरकार ने प्रसिद्ध पर्यावरणविदों और स्कूली छात्रों के बीच संवाद कायम करने के लिए दो हफ़्ते की कार्यशाला आयोजित की है। इस कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में स्कूली छात्रों को पर्यावरण के विभिन्न पक्षों पर जानकारी मिलेगी। साथ ही कई जाने-माने पर्यावरणविदों के विचार सुनने का अवसर भी मिलेगा। यह कार्यशाला पूर्णतः निःशुल्क है। यह पूरा आयोजन दिल्ली सरकार द्वारा किया जा रहा है। आयोजनकर्ता उन बच्चों को कार्यशाला में बुलाना चाहते हैं जो पर्यावरण के प्रति विशेष रुचि रखते हैं।

दिनेश की उम्र 16 वर्ष है। उसे परिवार वालों से पर्यावरण के प्रति विशेष लगाव आरंभ से ही मिला। वह भविष्य में पर्यावरण के क्षेत्र में ही काम करना चाहता है। वह स्कूल की पर्यावरण जागृति संस्था का सदस्य है। पिछले दो वर्षों से वह स्कूल और अपने मौहल्ले में कई पर्यावरण संबंधी गतिविधियाँ आयोजित कर चुका है। वह अपने जगतजाल पर नियमित रूप से पर्यावरण संबंधी विषयों पर लिखता है। वह रोज़ाना स्कूल जाता है। उसका स्कूल 2 बजे समाप्त होता है। लिहाज़ा, सप्ताह के दौरान वह कार्यशाला में नहीं जाना चाहता। सप्ताहांत में वह दोपहर को खेलने जाता है इसलिए सुबह का समय सर्वाधिक उचित है। वह नई दिल्ली शहर के आश्रम इलाके में 16 महारानी बाग, आश्रम में रहता है। उसका ई-मेल है dd1@hotmail.com और उसका टेलिफोन न. 29638763 है।

https://xtremepape.rs/

आप अपने को दिनेश मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

पर्यावरण कार्यशाला

शास्त्री भवन, रफ़ी मार्ग, नई दिल्ली।

दूरभाष 00-91-1127748952, 00-91-1127572835

आवेदक का नाम....दिनेश ......

(सही का निशान लगाएं) आयु – 14–15 ☐ 16–17 ☐ 18–19 ☐

ईमेल – ....

पूरा पता – ....

....

....

निम्नलिखित विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सप्ताह के दौरान।

☐ सप्ताहांत में।

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सुबह 9 बजे से 12 बजे तक

☐ दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक

पर्यावरण संबंधी किन्हीं दो गतिविधियों की जानकारी दीजिए

....

....

....

....

[अंक:7]

https://xtremepape.rs/

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

'बच्चों को लेकर शर्मनाक है हमारा रवैया' शीर्षक से निम्नलिखित लेख पढ़िए।

किसी रियलिटी टी.वी. शो में चार साल की बच्ची किसी भड़कीले गाने पर नाच रही है और लोग तालियां बजा रहे हैं। कितना अशोभनीय दृश्य होता है लेकिन किसी को परवाह ही नहीं। बेचारे बच्चे, अपने मां-बाप के सपनों का वज़न ढोए चले जा रहे हैं।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक़ फ़िल्म और टी.वी. पर काम करने का लालच देकर बच्चों से उनका बचपन छीना जा रहा है। इसके द्वारा यह जानकारी भी मिली कि निर्माता बच्चों के मां-बाप को सुनहरे सपने दिखाते हैं कि वह आपके बच्चों को स्टार बना देंगे। ऐसे ही कई सपने दिखाकर इन बच्चों से जमकर काम लिया जाता है। पढ़ने और खेलने की उम्र में बेचारे 12–12 घंटे सेट पर काम करते हैं। फिर उनके छोटे छोटे कंधों पर सफलता और असफलता का बोझ भी डाला जाता है। ज़रा सोचिए बच्चों के कोमल मन पर कितना दबाव पड़ता होगा।

भारत में फ़िल्मों में बच्चों के हितों को देखने वाली कोई संस्था ही नहीं है। इस सर्वेक्षण द्वारा बच्चों के हितों को ध्यान में रखते हुए कई सिफारिशें की गई हैं। इसके अनुसार शनिवार, रविवार और छुट्टी के दिन शूटिंग नहीं होनी चाहिए। बच्चों से दिन में चार-पांच घंटे से ज़्यादा काम नहीं लिया जाए। बच्चों को शूटिंग संबंधी निर्देश कम से कम दिए जाएं। बच्चों से स्वाभाविक रहने को कहा जाये और उसी को कैमरे में कैद किया जाए।

यह भी होता है कि जब अभिभावक फिल्म निर्माताओं के सामने यह शर्ते रखते हैं कि उनका बच्चा सिर्फ़ छुट्टी के दिन काम करेगा और चार-पांच घंटे से ज़्यादा काम नहीं करेगा तो वो भाग खड़े होते हैं। लेकिन अब इन रियलिटी शो के ज़रिये सभ्रांत परिवारों के बच्चों का भी शोषण हो रहा है। रातों रात अमीर बनने की ललक के चलते कहीं बच्चे माँ-बाप की कुंठा का शिकार बनते हैं तो कहीं उनके लिए सफलता की सीढ़ी बन रहे हैं। असफलता के डर के कारण इन बच्चों में अनेक प्रकार के मनोविकार पैदा हो जाते हैं। अचानक मिली सफलता को ये कभी-कभी पचा नहीं पाते एक दो साल तक ये चकाचौंध की दुनिया में जगमगाते हैं परन्तु कुछ समय बाद गुम हो जाते हैं। बच्चों को यहाँ लम्बी अवधि तक अलग रखा जाता है, दबाव और चिंता के माहौल में रहने व आराम की कमी के कारण ये अनिद्रा का शिकार हो जाते हैं। शिशुरोग विशेषज्ञों के अनुसार शूटिंग के दौरान तेज रोशनी का सामना करना पड़ता है जिसका उनकी आँखों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बच्चों को सजाने सवांरने के दौरान उनके चेहरे पर जो सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री लगाई जाती है उससे उनकी कोमल त्वचा को नुकसान होता है।

© UCLES 2015

https://xtremepape.rs/

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

आपके स्कूल में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का विषय है 'बच्चों को लेकर शर्मनाक है हमारा रवैया' इस लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपका भाषण आधारित होगा।

7 टी.वी. पर काम का प्रलोभन देकर किस तरह बच्चों का शोषण किया जाता है?

- .... [1]
- .... [1]

8 बच्चों के हितों को ध्यान में रखते हुए किन प्रस्तावों को रखा गया?

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

9 बच्चों पर कई तरह के प्रतिकूल प्रभाव पड़ते हैं?

- .... [1]
- .... [1]

[अंक:7]

© UCLES 2015

[कृपया पृष्ठ उलटें]
https://xtremepape.rs/

अभ्यास 4 प्रश्न –10

निम्नलिखित आलेख का सारांश लिखिए जिसके द्वारा बतायें कि जल संरक्षण के लिए क्या कदम उठायें? आलेख के आधार पर उन मुख्य बिन्दुओं का समावेश अपने शब्दों में करें।
आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

राष्ट्रीय विकास में जल की महत्ता को देखते हुए अब हमें 'जल संरक्षण' को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रखकर पूरे देश में कारगर जन-जागरण अभियान चलाने की आवश्यकता है। 'जल संरक्षण' के कुछ परंपरागत उपाय तो बेहद सरल और कारगर रहे हैं। सबको जागरूक नागरिक की तरह 'जल संरक्षण' अभियान के बारे में जागृति लानी होगी। 'बाल्टी' में जल लेकर नहाने से 'फव्वारे' या 'टब' में स्नान की तुलना में बहुत जल बचाया जा सकता है। पुरूष वर्ग दाढ़ी बनाते समय यदि नल बन्द रखें तो बहुत जल बच सकता है। रसोई में जल की बाल्टी या टब में अगर बर्तन साफ करें, तो जल की बहुत बड़ी हानि रोकी जा सकती है।

भारत के कई इलाकों में शौचालय में जल संरक्षण के लिए कई प्रयोग किए गए हैं। शौचालय में लगी पानी की टंकी में रेत भरी प्लास्टिक की बोतल रख देने से हर बार 'एक लीटर जल' बचाने का कारगर उपाय सबसे ज़्यादा सफल प्रयोग रहा है। घरों, मुहल्लों और सार्वजनिक पार्कों, स्कूलों, अस्पतालों, दुकानों, मन्दिरों आदि में लगी नल की टोंटियाँ खुली या टूटी रहती हैं, तो अनजाने ही प्रतिदिन हजारों लीटर जल बेकार हो जाता है। इस बर्बादी को रोकने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर प्रयोग के बाद नल बंद रखने का नोटिस लगाएं तथा इनकी चोरी को दंडात्मक अपराध घोषित कर जागरुकता बढ़ानी होगी।

नगरों और महानगरों में घरों की नालियों के पानी को गढ्ढे बना कर एकत्र किया जाए और पेड़-पौधों की सिंचाई के काम में लिया जाए, तो साफ पेयजल की बचत अवश्य की जा सकती है। अगर प्रत्येक घर की छत पर 'वर्षा जल' का भंडार करने के लिए एक या दो टंकी बनाई जाएँ और इन्हें मजबूत जाली या फिल्टर कपड़े से ढ़क दिया जाए तो हर नगर में 'जल संरक्षण' किया जा सकेगा। विज्ञान की मदद से आज समुद्र के खारे जल को पीने योग्य बनाया जा रहा है, गुजरात के द्वारिका आदि नगरों में प्रत्येक घर में 'पेयजल' के साथ-साथ घरेलू कार्यों के लिए 'खारेजल' का प्रयोग करके शुद्ध जल का संरक्षण किया जा रहा है, इसे बढ़ाया जाए।

https://xtremepape.rs/

'जल संरक्षण'

[अंक:10]

https://xtremepape.rs/

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 11–17

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

युवा लेखक रमेश चौबे हिंदी के स्थापित प्रतिमानों को तोड़ने में विश्वास करते हैं। उन्हें लगता है कि हिंदी के पाठक तभी बढ़ेंगे, जब आमजन की बोलचाल की भाषा में कहानियां गढ़ी जाएं। आलोचक भले ही उनके इस दृष्टिकोण को हिंदी के विकास के लिए उचित न मानें, लेकिन पाठक उनकी हर कहानी में खुद की परछाई ढूंढते हैं। उनकी दोनों पुस्तकें 'टर्म्स एंड कंडीशंस अप्लाई' और 'मसाला चाय' लोकप्रिय साबित हुई। वह बताते हैं "मैं बचपन में हिंदी कॉमिक्स और स्कूल में हिंदी कहानियां बड़े चाव से पढ़ता था। इंजीनियरिंग कॉलेज जाने पर भी यह क्रम टूटा नहीं। एक दिन बनारस के एक सीनियर शत्रुघ्न सिंह ने 'मुझे चांद चाहिए' और 'शेखर एक जीवनी' पढ़ने के लिए दी।"

"इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान सांस्कृतिक उत्सवों के लिए 15 मिनट की लघु नाटिका लिखी, जिसे बेहद पसंद किया गया। अगले दो साल में चार लघु नाटक लिखे। लिखने में मज़ा आने लगा। इंजीनियरिंग के बाद सॉफ्टवेयर की नौकरी करने का मन नहीं था और नौकरी मिल भी नहीं रही थी। उन्हीं दिनों एम.बी.ए. की तैयारी के दौरान घर के पास रहने वाले एक भैया ने किसी स्कूल का गीत लिखने के लिए मुझसे कहा। मैंने एक घंटे में लिखकर उन्हें थमा दिया। उन्होंने यह कहते हुए मुझे हज़ार रुपये दिए कि यह सही कीमत से बहुत कम है, लेकिन इसलिए दे रहा हूं ताकि तुम्हें यह विश्वास हो सके कि तुम लिखकर भी कमा सकते हो।"

"मेरी आरंभिक पढ़ाई सरकारी स्कूल में हुई। मैं अपने मोहल्ले के अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ने वाले कई लड़कों को तब अचरज से देखता, जब वे बताते थे कि उनके स्कूल में हिंदी में बातचीत करने पर सज़ा मिलती है। मैंने उसी समय तय कर लिया था कि मैं बड़ा होकर हिंदी के लिए कुछ करूंगा। मेरी कहानियां शत प्रतिशत यथार्थ से जुड़ी होती हैं इनके सभी पात्र मेरी आस-पास की जिंदगी से जुड़े होते हैं। कुछ समय पहले तक यह माना जाता था कि अगर आपकी लिखी हुई बात को पाठक आसानी से समझ रहा है, तो इसका मतलब है कि आपके लेखन में गहराई नहीं है। अब लोगों में यह भ्रांति नहीं है। जिसे आसानी से पढ़ा और समझा जा सके, उसे ही लोग सराह रहे हैं। अलग-अलग व्यवसायों से जुड़े लोग अपने विविध अनुभवों को आसान हिंदी में पेश कर रहे हैं, जिन्हें आम लोगों के बीच खूब पसंद किया जा रहा है। इस समय नई पीढ़ी जो हिंदी लिख रही है उसमें उर्दू, अंग्रेजी, मुंबइया, पंजाबी सब कुछ है। यह बदलाव अच्छा है या बुरा एक अलग चर्चा का विषय है।"

https://xtremepape.rs/

कृपया प्रश्न 11 से 14 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण – युवा लेखक रमेश स्थापित प्रतिमानों को पाना चाहते हैं।		✓
औचित्य – रमेश चौबे स्थापित प्रतिमानों को तोड़ना चाहते हैं।		
11 पाठक उनकी कहानियों में समाज का प्रतिबिंब देखते हैं।		
12 इंजीनियरिंग कॉलेज में भी कहानियाँ पढ़ना जारी रहा।		
13 मुझे गीत लिखने में एक दिन लगा।		
14 गीत लिखने के लिए मुझे हज़ार रुपये दिए गए और कहा गया कि यह उचित रकम है।		

11 पाठक उनकी कहानियों में समाज का प्रतिबिंब देखते हैं।

....

....

12 इंजीनियरिंग कॉलेज में भी कहानियाँ पढ़ना जारी रहा।

....

....

13 मुझे गीत लिखने में एक दिन लगा।

....

....

14 गीत लिखने के लिए मुझे हज़ार रुपये दिए गए और कहा गया कि यह उचित रकम है।

....

....

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

15 लड़कों को सज़ा कब मिलती थी?

.... [1]

16 साहित्य लेखन के बारे में पूर्वधारणा क्या थी?

.... [1]

17 वर्तमान में किस तरह के लेखन को पसंद किया जाता है?

.... [1]

[अंक:10]

https://xtremepape.rs/

अभ्यास 6 प्रश्न 18

वर्षा ऋतु का एक दिन?

छुट्टियों पर जाते समय अचानक वर्षा आरंभ हो गई। इस दिन के अपने अनुभवों को अपनी डायरी में लिखें। इस अनुभव ने आपके पूरे दिन की योजना को किस तरह प्रभावित किया उसका विस्तार से विवरण दीजिए। आपका विवरण विषय से संबंधित जानकारी पर केन्द्रित होना चाहिए।

आपका विवरण 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए।

लिखित विवरण पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंक निर्धारित हैं।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

https://xtremepape.rs/

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक: 20]

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

© UCLES 2015

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

© UCLES 2015

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

https://xtremepape.rs/